© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 04 | January – March 2018

जनसंख्या वितरण एवं व्यावसायिक संरचना का प्रतिरूप– उत्तराखण्ड़ राज्य के जनपद उत्तरकाशी के संदर्भ में एक भोगौलिक अध्ययन

[1]डॉ० कमलसिंह बिष्ट असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भगूोल विभाग, डी0बी0एस0(पी0जी0)कॉलेज, देहरादून
[2]प्रवीणसिंह राणा शोध छात्र, भगूोल विभाग, डी0बी0एस0(पी0जी0)कॉलेज, देहरादून

सारांश

'व्यवसाय' समाज का महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलाप है जो किसी प्रदेश के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं जनांकिकीय विशेषताओं को प्रभावित करता है, इससे राज्य की विशेषताओं का ज्ञान होता है कि वह कृषि प्रधान है या उद्योग प्रधान। तकनीकि विकास के अमूल परिवर्तनों ने जनसंख्या–संसाधन सम्बन्धों के स्थानीय प्रतिरूप को प्रभावित किया है जो कि स्थानीय व्यवसायिक संरचनाओं में परिवर्तन के रूप में परिलक्षित हो रहा है। यही कारण है कि विकसित तथा विकासशील देशों के जनसंख्या सम्बन्धों में अत्यधिक अन्तर दिखाई देता है विकासशील देशों की तुलना में विकसित देशों में वहां की जनसंख्या का बड़ा भाग तृतीय व चतुर्थ क्रियाओं में संलग्न रहता है जबकि विकासशील देशों में अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक क्रियाओं में संलग्न रहती है तथा व्यावसायिक संरचना में गैर कर्मियों का प्रतिशत अधिक रहता है। इसी संदर्भ में उत्तराखण्ड़ राज्य के जनपद उत्तरकाशी का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है, जिसमे जनपद में जनसंख्या वितरण (2011) व 1951 से 2011 तक जनसंख्या वृद्धि दर का राज्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन तथा वर्ष 1991 से 2011 तक व्यावसायिक संरचना का अध्ययन जनपद स्तर पर किया गया है । प्रस्तुत शोध पूर्णतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है तथा इनका संकलन भारतीय जनगणना रिपोर्ट, सांख्यिकी पत्रिका (उत्तरकाशी) तथा सामाजिक–आर्थिक समीक्षा जनपद उत्तरकाशी से किया गया है।

संकेत शब्दः व्यावसायिक संरचना, कार्यशील जनसंख्या, अकार्यशील जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि दर।

प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र या राष्ट्र की व्यावसायिक संरचना वहां की आर्थिक स्वरूप का द्योतक है। यह कृषि, उद्योग, सेवा क्षेत्र, शोध एवं अनुसंधान विकास में जनसंख्या के जुड़ाव और इनमें जन प्रतिनिधित्व को दर्शाता है। व्यावसायिक संरचना क्षेत्र विशेष की आर्थिक स्थिति के साथ–साथ वहां की कार्यशील जनसंख्या तथा उस पर निर्भरता और रोजगार व बेरोजगारी की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करती है। (M. U. Deshmukh, 2015) व्यावसायिक संरचना जनसंख्या संरचना का एक प्रमुख घटक है जो कार्यशील और अकार्यशील जनसंख्या के मध्य अनुपात को दर्शाता है। साथ ही यह उस क्षेत्र की सामाजिक आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करता है। जनसंख्या आर्थिक रूप से सक्रिय तथा असक्रिय भागों में बांटी जाती है। आर्थिक तथा सामरिक सेवाओं के उत्पादन में लगी अथवा प्रयत्नशील जनसंख्या आर्थिक रूप से सक्रिय कहलाती है। महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास दोनों आपस में सम्बन्धित हैं क्योंकि जिस क्षेत्र में महिलाएँ सशक्त होंगी तो वे आर्थिक क्रियाओं में अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करेंगी जिससे आर्थिक विकास को बल मिलेगा। (Arvind Kumar, 2018) जीविकोपार्जन तथा जीवनयापन के लिये की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यवसाय कहते हैं। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना से तात्पर्य संपूर्ण कार्यरत जनसंख्या का विभिन्न कार्य वर्गो के अन्तर्गत विभाजन से है। इससे पराश्रितों का अनुपात ज्ञात होता है साथ ही कार्य विशेष में संलग्न जनसंख्या के सापेक्ष स्थिति भी स्पष्ट हो जाती है। इसका विश्लेषण लिंगानुपात एवं आयु वर्ग के साथ करके क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास की संभावित दशा का भी आंकलन किया जाता है। भारतीय जनगणना में जनसंख्या को

आर्थिक दृष्टिकोण से 3 भागों में बांटा जाता है। प्रथम – मुख्य काम करने वाले (Main worker), द्वितीय सीमांतिक काम करने वाले (Marginal worker) एवं काम न करने वाले (Non worker)। भारतीय जनगणना के अनुसार काम करने वाला श्रमिक वह व्यक्ति होता है जिसकी मुख्य क्रिया अपनी भौतिक अथवा मानसिक शक्ति का उपभोग कर आर्थिक दृष्टि से उत्पादन कार्यो में योगदान करना है। (2011, 2011) वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार व्यावसायिक संरचना को मुख्यतः तीन भागों में बांटा गया है – दीर्घकालिक कर्मी, अल्पकालिक कर्मी और गैर कर्मी। दीर्घकालिक व अल्पकालिक कर्मियों को पुनः 4 भागों में बांटा गया है – काश्तकार, खेतिहर मजदूर, पारिवारिक उद्योग कर्मी और अन्य कर्मी। इस प्रकार व्यावसायिक संरचना को निम्न आरेख से समझ सकते हैं–

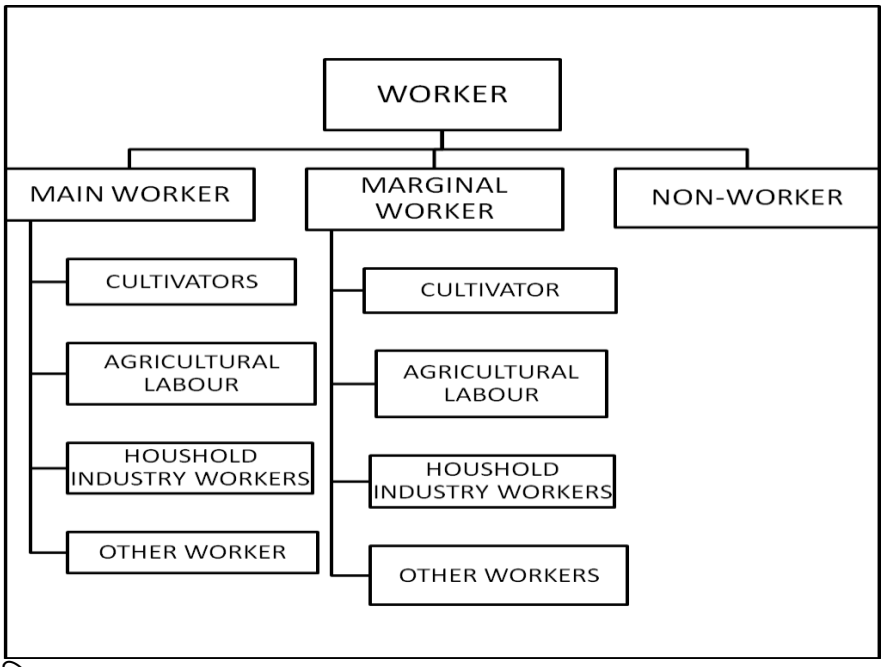

चित्र–

अध्ययन क्षेत्र

उत्तरकाशी राज्य का सीमान्त जनपद है। इसकी स्थिति $30^0$43′ उ० से $30^0$73′ उत्तरी अक्षांश तथा $78^0$28′ पू० से $78^0$45′ पूर्वी देशान्तरो ंके मध्य स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 8016 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर मे ंहिमाचल प्रदेश व तिब्बत, दक्षिण मे टिहरी गढ़वाल, पूर्व मे ंचमोली तथा पश्चिम मे ंदेहरादून है। उत्तरकाशी का अधिकांश भाग हिमाच्छादित रहता है। इस भूभाग में मानसूनी पवनो ंएवं स्थानीय चक्रवातों ंके द्वारा वर्षा होती है, मध्य व दक्षिण भाग मे ंजल वर्षा होती है जबकि उत्तरी भाग मे ं हिम वृष्टि होती है। औसत वार्षिक वर्षा 1800 मिलिमीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद उत्तरकाशी की कुल जनसंख्या 330086 है, जिनमें 168597 पुरुष तथा 161489 महिलाएँ हैं। यहाँ 707 गाँव हैं, जिनमें 694 आवासीय तथा 61 गैर आवासीय हैं, जनपद में 7.36 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है, तथा जनसंख्या घनत्व 41 है, यहां का कुल लिंगानुपात 958 है, जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में 968 तथा नगरीय क्षेत्रों में 838 है, एवं जनपद की साक्षरता दर 75.88 प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 88.79 तथा महिला साक्षरता 62.35 है। जनपद में 6 विकासखण्ड (भटवाड़ी, डुण्ड़ा, चिन्यालीसौड़, नौगांव, पुरोला तथा मोरी) हैं तथा 6 तहसीलें (भटवाड़ी, राजगड़ी, डुण्ड़ा, चिन्यालीसौड, पुरोला तथा मोरी) हैं।

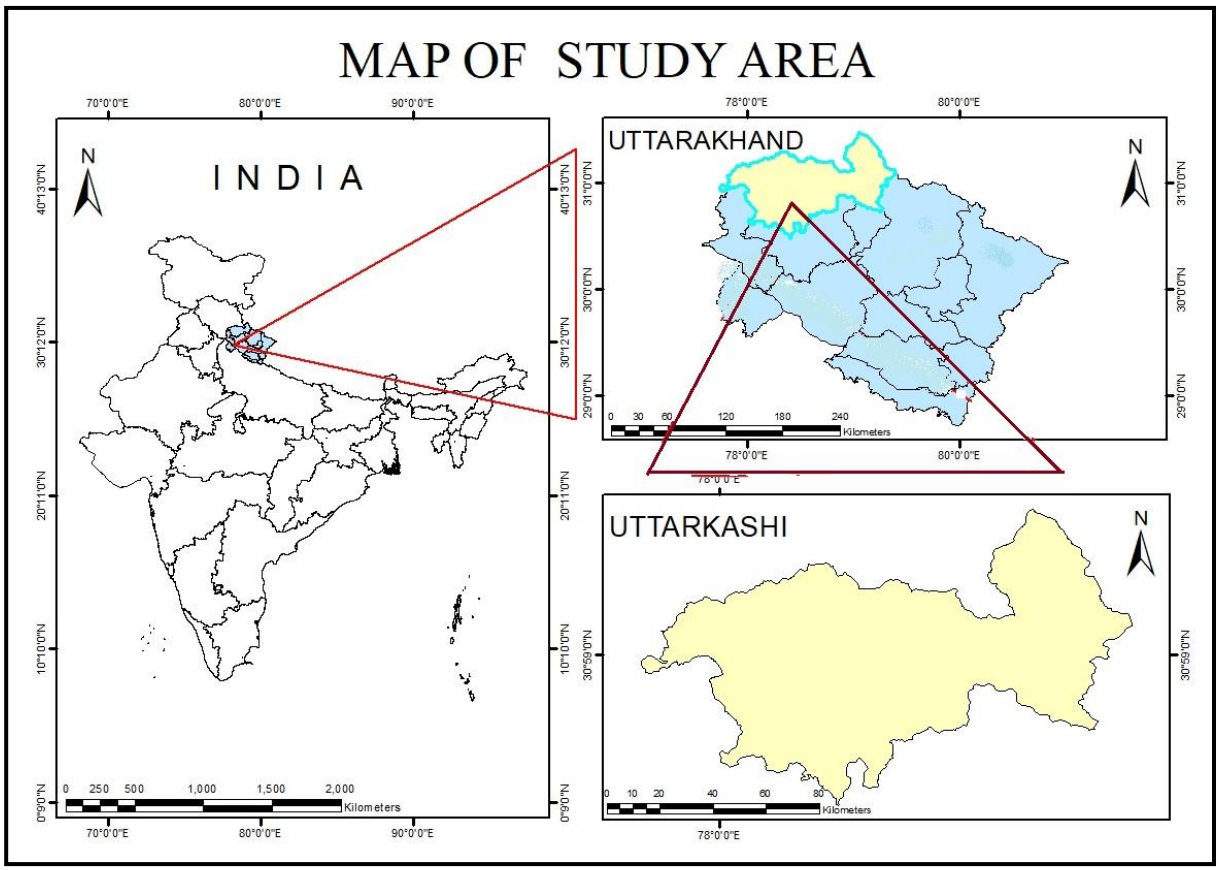

साहित्यावलोकन

जनसंख्या का प्रतिरूप एवं व्यावसायिक संरचना समाज के सामाजिक–आर्थिक विकास का प्रमुख सूचक है इसी संदर्भ में अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या प्रतिरूप एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध विषय पर विभिन्न विद्वानों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं, जिनमें अरविंद कुमार (2018), एम० यू० देशमुख (2014), डॉ०, के० एस० सरवासे, विष्णु प्रसाद (2017) आदि के नाम प्रमुख हैं।

उद्देश्य

1)–जनपद में जनसंख्या वृद्धि दर एवं वर्तमान में जनसंख्या वितरण का अध्ययन।
2)– जनपद में व्यावसायिक संरचना का अध्ययन।

विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उत्तराखण्ड़ राज्य के जनपद उत्तरकाशी में जनसंख्या एवं व्यावसायिक संरचना के प्रतिरूप के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। अध्ययन में पूर्णतः द्वितीय आकडों का प्रयोग किया गया है। जिनका संकलन भारतीय जनगणना पुस्तिका, जिला सांख्यिकीय पत्रिका तथा अन्य पुस्तकों एव

पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से किया गया है। अध्ययन को रूचिकर एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए विभिन्न तालिकाओं, आलेखों, आरेखों तथा सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या प्रतिरूप –

किसी भी क्षेत्र का जनसंख्या प्रतिरूप वहां की जनांकिकीय विशेषताओं को समझने में मदद करता है तथा क्षेत्र विशेष के अध्ययन को उपर्युक्त आधार प्रदान करता है, इसके अन्तर्गत जनसंख्या स्वरूप, लिंगानुपात, वृद्धिदर, साक्षरता आदि का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में जनपद उत्तरकाशी में 1951 से 2011 की जनसंख्या का अध्ययन किया गया है जिसमें कुल जनसंख्या के साथ–साथ पुरुष और महिला जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि और लिंगानुपात को मुख्य रूप से शामिल किया गया है। तालिका–1 से स्पष्ट है कि 1951 की जनगणना के अनुसार उत्तरकाशी की जनसंख्या 106058 थी जिसमें 53314 पुरुष और 52844 महिलाएँ हैं, तथा जनसंख्या वृद्धि दर मात्र 3.69 प्रतिशत व लिंगानुपात 993 था वहीं राज्य में कुल जनसंख्या 2945929 थी और वृद्धि दर 12.67 प्रतिशत थी। वर्ष 2011 में यहां की जनसंख्या 330086 पहुँच गई है जिसमें 168597 पुरुष और 161489 महिलाएँ हैं, तथा लिंगानुपात 958 है वहीं राज्य में कुल जनसंख्या 10086292 है, तथा वृद्धिदर 18.81 है। 1951 से 2011 तक अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में 211.23 प्रतिशत की वृद्धि हुई इसके साथ–साथ लिंगानुपात भी चिंताजनक स्थिति में है 1951 से 1981 तक लिंगानुपात तेजी से कम हुआ है जिसका प्रमुख कारण धार्मिक रूढ़िवादिता, अशिक्षा तथा सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़ापन है। यद्यपि 1981 से इसमें धीरे–धीरे सुधार हो रहा है और यह 958 तक पहुँच गया है, परन्तु यह अभी 1951 के स्तर पर (993) नहीं आ पाया है।

तालिका संख्या–1
उत्तराखण्ड़ और जनपद उत्तरकाशी मे जनसंख्या प्रतिरूप–1951 से 2011

Year	Uttarakhand		Uttarkashi					
			Person	Variation since the preceding census		Male	Female	Sex ratio
	Person	Growth rate		Absolute	Percentage			
1951	29,45,929	12.67	106058	3778	3.69	53314	52844	993
1961	36,10,938	22.57	122836	16778	15.82	62534	60302	964
1971	44,92,724	24.42	147805	24969	20.33	77832	69973	899
1981	57,25,972	27.45	190948	43143	29.19	101533	89415	881
1991	70,50,634	23.13	239709	48716	25.54	124978	114731	918
2001	84,89,349	20.41	295013	55304	23.07	152016	142997	941
2011	1,00,86,292	18.81	330086	35073	11.89	168597	161489	958

, स्रोत– भारतीय जनगणना रिपोर्ट 1951–2011, सांखिकी पत्रिका 2016–17

ग्राफ–1

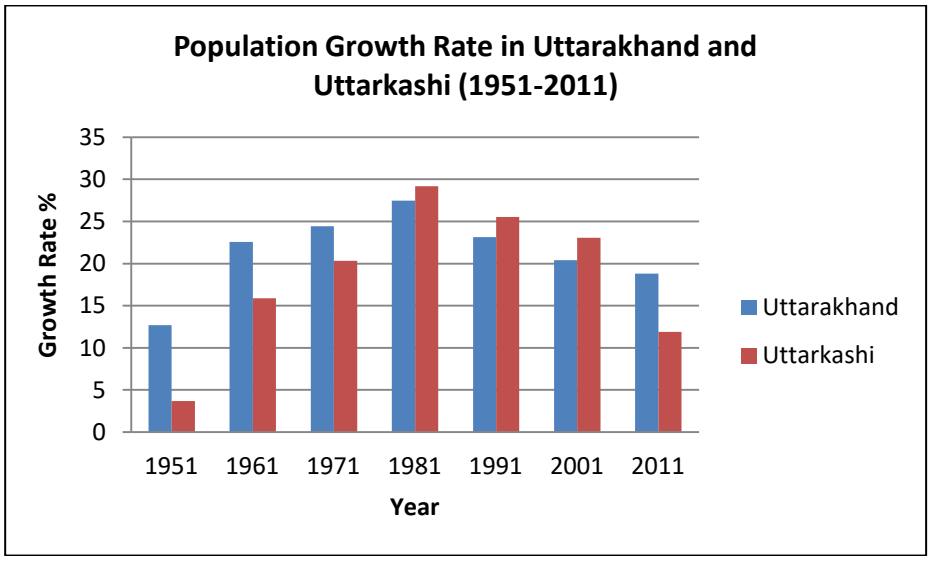

उपर्युक्त ग्राफ में उत्तराखण्ड़ और जनपद उत्तरकाशी में 1951–2011 की जनगणना वृद्धि दर को दर्शाया गया है, जिसे देखने पर स्पष्ट है कि 1951 में उत्तरकाशी में जनसंख्या वृद्धि दर सम्पूर्ण राज्य की तुलना में एक चौथाई है अर्थात जनसंख्या वृद्धि निम्न है जबकि 1951 के बाद स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा आदि मूलभूत सुविधाओं के बढ़ने के कारण जनसंख्या वृद्धि तेजी से बढ़कर 3.69 प्रतिशत से 1961 में 15.82 प्रतिशत हो गई है परन्तु फिर भी राज्य के अनुपात में (22.57 प्रतिशत) कम रही तथा 1981 तक आते–आते जनसंख्या वृद्धिदर राज्य (27.45 प्रतिशत) से अधिक 29.14 प्रतिशत हो गई अर्थात 1971 से 1981 में जनसंख्या मे तेजी से वृद्धि हुई। तथा यह क्रम 2001 तक जारी रहा, यद्यपि 1981 से 2001 के बीच जनसंख्या वृद्धि दर घटती दर से बढ़ती रही परन्तु 2011 में पुनः जनसंख्या वृद्धि दर में तेजी से कमी आयी और यह 11.89 प्रतिशत हो गई जो कि राज्य (18.81 प्रतिशत)की तुलना में लगभग 8 प्रतिशत कम है वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड़ नया राज्य बनने के बाद शिक्षा, स्वास्थ्य, जागरुकता अभियान तथा पलायन के कारण जनसंख्या में निम्न वृद्धि देखी गई।

जनपद उत्तरकाशी में जनसंख्या वितरण–

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद उत्तरकाशी में विकासखण्ड़ के अनुसार जनसंख्या वितरण, अनुसूचित जाति और जनजाति जनसंख्या लिंगानुपात और साक्षरता का अध्ययन किया गया है।

तालिका संख्या–2
जनपद उत्तरकाशी में जनसंख्या वितरण–2011

Block	Area (km^2)	Population			S.C Popu;ation			S.T. Population			Sex ratio	Literacy rate (%)
		Total Populat io	Male Populatio	Female Populatio		Male	Female		Male	Fem ale		
Mori	1738	39691	20392	19299	11800	6058	5742	100	52	48	939	63.49
Puraula	332.34	31863	16141	15724	11182	5596	5586	486	258	228	930	73.82
Naugaon	882.01	65668	33343	32325	19142	9773	9369	641	228	413	939	73.3
Dunda	444.67	59843	29858	29985	14445	7300	7145	1200	565	635	929	76.12
Chinyali saur	293.92	49641	24289	25352	13251	6531	6720	8	3	5	910	74.73
Bhatwari	4298.04	56405	29903	26502	6482	3367	3115	907	454	453	890	82.73

स्रोत– भारतीय जनगणना रिपोर्ट 2011, सांख्किी पत्रिका 2016–17

प्रस्तुत ग्राफ संख्या 1,2,3,4 और 5 में क्रमशः अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या, अनुसूचित जाति और जनजाति की जनसंख्या, लिंगानुपात और साक्षरता दर को दर्शाया गया है। ग्राफ 1 और तालिका 1 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक जनसंख्या वाला विकासखण्ड़ नौगांव है जिसकी कुल जनसंख्या 65668 है जिसमें 33343 पुरुष और 33325 महिलाएँ हैं, तथा लिंगानुपात और साक्षरता क्रमशः 939 और 73.3 प्रतिशत है, नौगांव में लिंगानुपात यद्यपि अन्य विकासखण्डों की अपेक्षा उच्च है परन्तु साक्षरता दर न्यूनतम स्तर पर है। इसी क्रम में जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा विकासखण्ड़ डुण्ड़ा है जिसकी जनसंख्या 59843 है जबकि इसका कुल क्षेत्रफल मात्र 444.67 वर्ग किलोमीटर है तथा साक्षरता दर 76.12 प्रतिशत और लिंगानुपात 929 है। भटवाड़ी विकासखण्ड यद्यपि क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा (4298.04) है, परन्तु यह 56405 जनसंख्या के साथ तीसरा बड़ा विकासखण्ड है तथा यहाँ की साक्षरता दर सबसे अधिक 82.73 प्रतिशत है जो कि जनपद (75.8 प्रतिशत) और राज्य की (78.82 प्रतिशत) साक्षरता दर से भी अधिक है परन्तु लिंगानुपात सबसे कम 890 है जो कि जनपद (958) और राज्य (963) की तुलना में बहुत कम है। जनसंख्या की दृष्टि से चौथा बड़ा विकासखण्ड चिन्यालीसौड़ है जिसकी जनसंख्या 49641 है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से यह सबसे छोटा विकासखण्ड है। पाँचवां बड़ा विकासखण्ड मोरी है जिसकी जनसंख्या 39691 है तथा यहाँ साक्षरता दर (63.49) सबसे कम है और लिंगानुपात सबसे अधिक (930) है।

ग्राफ 2 और 3 में अध्ययन क्षेत्र की अनुसूचित जाति और जनजाति की जनसंख्या को दर्शाया गया है जिससे स्पष्ठ है कि इनकी सर्वाधिक जनसंख्या क्रमशः नौगांव (19142) और डुण्ड़ा (1200) में है तथा सबसे कम जनसंख्या क्रमशः भटवाड़ी (64821) और चिन्यालीसौड़ (8) में है। ग्राफ 5 और 6 में क्रमशः लिंगानुपात और साक्षरता को दर्शाया गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक साक्षरता (82.73) भटवाड़ी में है और सबसे कम मोरी विकासखण्ड (63.49) में है तथा सर्वाधिक लिंगानुपात मोरी विकासखण्ड (939) में और सबसे कम भटवाड़ी में है। अतः स्पष्ट है कि जिन विकासखण्डों में साक्षरता दर सर्वाधिक है वहाँ लिंगानुपात सबसे कम है तथा जहाँ साक्षरता कम है वहाँ लिंगानुपात सर्वाधिक है।

ग्राफ–2

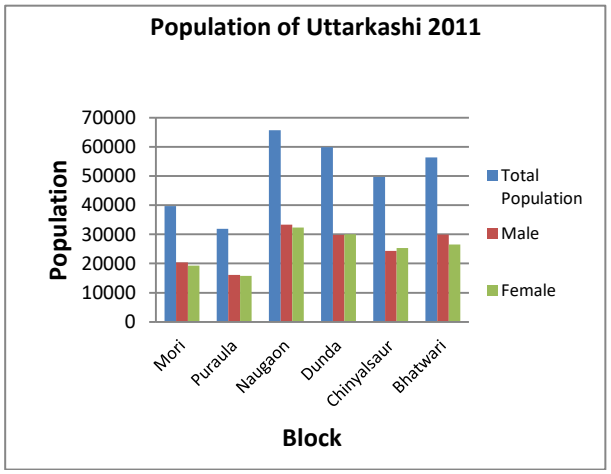

ग्राफ–4

ग्राफ–3

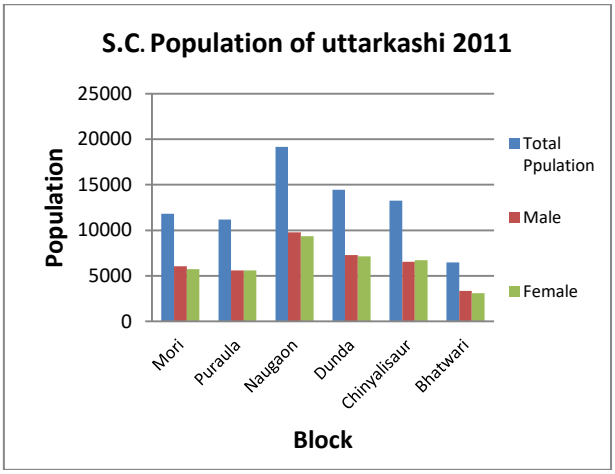

ग्राफ–5

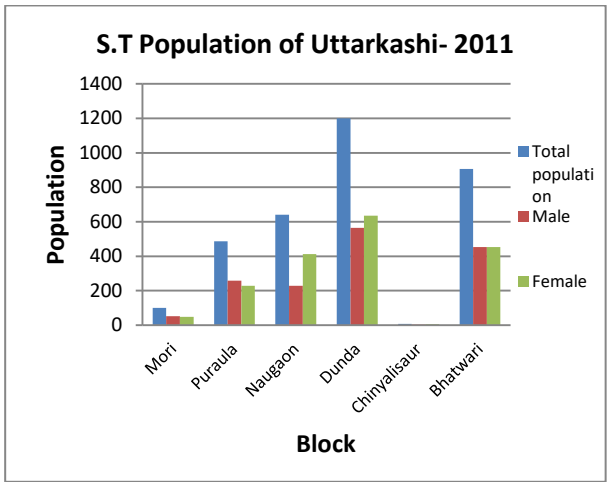

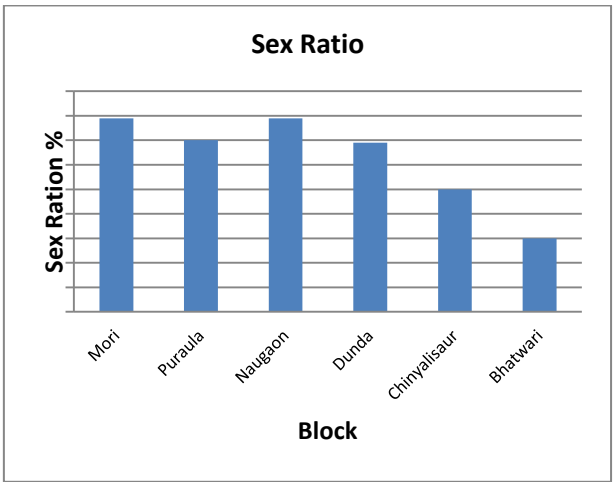

ग्राफ–6

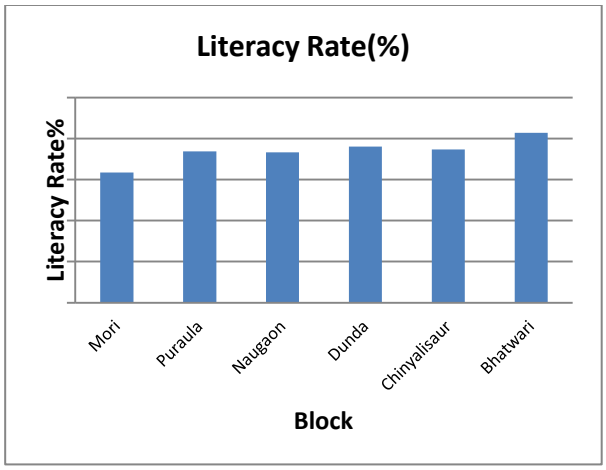

जनपद उत्तरकाशी में व्यावसायिक संरचना

तालिका संख्या–3

जनपद उत्तरकाशी में व्यावसायिक संरचना–1991 से 2011

Category	Person			Male			Female		
	1991	2001	2011	1991	2001	2011	1991	2001	2011
Total Population	239709	295013	330086	124978	152016	168597	114731	142997	161489
Total worker	121431	135904	157276	64970	73398	84265	56461	62506	73011
Main Worker	114993	114842	128367	63361	64352	71598	51632	50490	56769
Marginal Worker	6438	21062	28909	1609	9046	12667	4829	12016	16242
Non Worker	118278	159109	172810	60008	78618	84332	58270	80491	88478

स्रोत– भारतीय जनगणना रिपोर्ट 1991–2011

ग्राफ 7

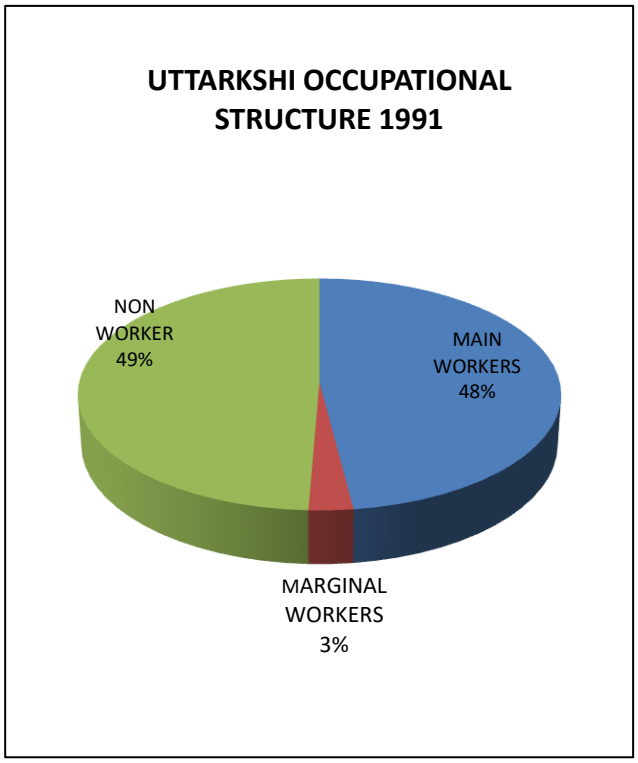

ग्राफ 8

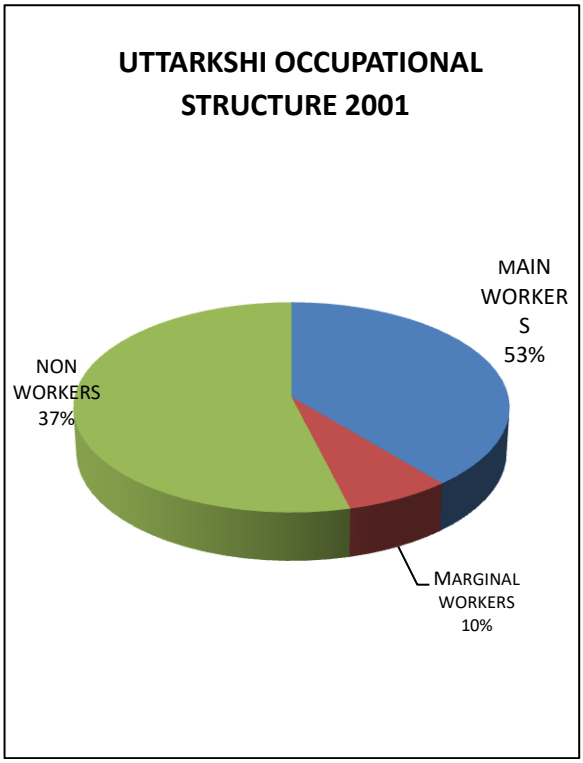

ग्राफ 9

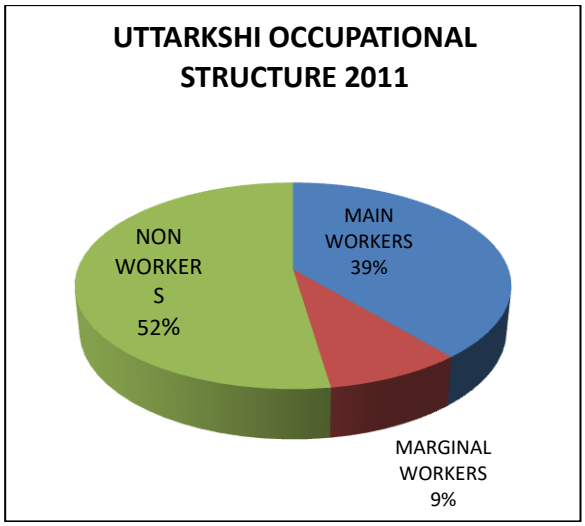

तालिका 3 और ग्राफ 7, 8 और 9 में जनपद उत्तरकाशी की 1991 से 2011 की व्यावसायिक संरचना को प्रदर्शित किया गया है जिसे निम्न रूपों में समझ सकते हैं।

1– मुख्य कार्यशील जनसंख्या –

ऐसे कर्मी जिन्होंने संदर्भ अवधि के अधिकांश भाग में 6 मास (180 दिन) या उससे अधिक कोई काम किया हो उन्हें दीर्घकालिक कर्मी माना गया है। जनगणना 1991 के अनुसार मुख्य कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 48 था, जो कि 2011 में घटकर 39 प्रतिशत हो गया अर्थात जनपद में काम करने वालों का प्रतिशत घट रहा है जबकि काम न करने वालों का प्रतिशत बढ़ रहा है जो कि जनपद के विकास के लिए अच्छा सूचक नहीं है। 1991 से 2011 में मुख्य कार्यशील जनसंख्या में 9 प्रतिशत की कमी आयी है जिसका प्रमुख कारण जनसंख्या के अनुपात में रोजगार का कम सृजन, स्वरोजगार के लिए धन की कमी, सरकार द्वारा स्वरोजगार प्रोत्साहित करने में उदासीनता, बैंकों से ऋण लेने में जटिल प्रक्रिया और ऊँची ब्याज दरें तथा सरकार द्वारा केन्द्रीकृत विकास के कारण पलायन को प्रोत्साहन आदि हैं। जनपद में 1991 से 2001 में पुरुष और महिला कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत में कमी आयी है तथा 2001 से 2011 में इनका प्रतिशत स्थिर है।

2– सीमांत कार्यशील जनसंख्या

ऐसे व्यक्ति जिन्होंने 6 माह से कम अवधि के लिए काम किया हो उन्हें अल्पकालिक कर्मी या सीमांत कर्मी माना गया है। जनगणना 1991 के अनुसार कार्यशील जनसंख्या में सीमांत कर्मियों का प्रतिशत 3 था जो कि 2001 में बढ़कर 10 प्रतिशत तथा 2011 में पुनः घटकर 9 प्रतिशत हो गया। जनपद में सीमांत कर्मियों का प्रतिशत यद्यपि बहुत कम है, परन्तु 1991 से 2011 मे इनमें तीव्र वृद्धि हुई है। जिसका प्रमुख कारण कृषिगत भूमि का आवासीय एवं अन्य कार्यात्मक क्षेत्रों में परिवर्तन के साथ–साथ नवीन कृषि तकनीकि के प्रयोग एवं तीव्र जनसंख्या वृद्धि की तुलना में रोजगार में कमी के कारण अधिकांश कृषक एवं कृषि मजदूर सीमांत कर्मी की श्रेणी में आ गए हैं।

3– अकार्यशील जनसंख्या

भारतीय जनगणना के कारण अकार्यशील जनसंख्या में 0–14 आयु वर्ग और 65 वर्ष से अधिक आयु वर्ग वाली जनसंख्या को शामिल किया जाता है। वर्ष 1991 में कुल गैर कर्मियों का प्रतिशत 49 है जो कि 2011 में बढ़कर 52 प्रतिशत हो गया है। यदि वर्ष 2011 में कार्यशील और अकार्यशील जनसंख्या की तुलना की जाय तो अकार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत (52), कार्यशील जनसंख्या (48) से अधिक है जिसका प्रमुख कारण तीव्र जनसंख्या वृद्धि है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

अध्ययन क्षेत्र जनपद उत्तरकाशी में वर्ष 1951 से 1981 तक जनसंख्या वृद्धि दर एवं वर्तमान में जनसंख्या का स्थानिक वितरण एवं व्यावसायिक संरचना का एक भौगोलिक अध्ययन है और इससे निम्न निष्कर्ष निकालते हैं–

1– अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 1951 से 1981 तक जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र रही परन्तु 1981 से 2011 तक जनसंख्या में वृद्धि दर घटती दर से बढ़ी है जिसका प्रमुख कारण शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि, समय–समय पर जनजागरुकता कार्यक्रम और साक्षरता दर में सुधार एवं वृद्धि है।

2– क्षेत्रफल के अनुसार विकासखण्ड़ों में जनसंख्या का वितरण असमान है, क्योंकि जनपद उत्तरकाशी पूर्णतः पर्वतीय क्षेत्र है जिस कारण इसका संपूर्ण क्षेत्र मानव निवास के लिए बहुत अनुकूल नहीं है अतः जहाँ पर भी

मानव निवास के लिए अनुकूल दशाएँ विद्यमान हैं वहां जनसंख्या का संकेन्द्रण पाया जाता है, साथ ही वर्तमान में जिन क्षेत्रों में मानव ने आधारभूत सुविधाओं का विकास कर लिया है उन क्षेत्रों मे अन्य क्षेत्रों से तीव्र गति से पलायन हो रहा है जो कि जनसंख्या के असमान वितरण के लिए प्रमुख कारण है।

3– साक्षरता और लिंगानुपात में विपरीत सम्बन्ध है, वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिस विकासखण्ड़ में साक्षरता सर्वाधिक है वहां लिंगानुपात निम्न है जैसे भटवाड़ी विकासखण्ड़, इसके विपरीत जिस विकासखण्ड़ में साक्षरता निम्न है वहां लिंगानुपात उच्च है जैसे मोरी विकासखण्ड़ ।

4– वर्ष 1991 से 2011 तक कुल कार्यशील जनसंख्या तथा कुल अकार्यशील जनसंख्या में ऋणात्मक परिवर्तन हुआ है, आर्थात कार्यशील जनसंख्या में कमी आयी है और अकार्यशील जनसंख्या में वृद्धि हुई है जिसका मुख्य कारण जनसंख्या के अनुपात में रोजगार का कम सृजन, जनजागरुकता की कमी, कृषि योग्य भूमि की कमी, उद्योगों की कमी, जीवकोपार्जन कृषि, स्त्रियों की अल्प सहभागिता एवं पलायन का होना है।

5– जनपद में 1991 से 2011 के व्यावसायिक आंकड़ो के अध्ययन से स्पष्ट है कि गैर कर्मियों की संख्या में वृद्धि हुई है, तथा मुख्य कर्मियों की संख्या में कमी आई है जो कि जनपद की आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा सूचक नहीं है।

अतः सरकार को अधिकतम निवेश कर रोजगार के विकल्प उपलब्ध कराकर, नए पर्यटन स्थलों को चिन्हित कर, कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध करा कर एवं आधारभूत संरचना को विकसित कर तथा मानव मूल्यों को ध्यान में रखकार अध्ययन क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में वृद्धि करके जनपद में स्थित 52 प्रतिशत गैर कर्मियों और 9 प्रतिशत सीमांत कर्मियों को कार्यशील जनसंख्या में परिवर्तित करने का प्रयास करना चाहिए साथ ही स्थानीय लोगों को भी क्षेत्र में अधिकतम निवेश द्वारा रोजगार के नए विकल्प उपलब्ध कराने चाहिए जिससे जनपद का सर्वांगीण विकास हो सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Bisht, K.S., Gupta, K.L., Nath, R. (2017). OCCUPATIONAL STRUCTURE OF RURAL POPULATION IN DISTRICT JAUNPUR: A BLOCK-WISE STUDY. Monthly Multidisciplinary Research Journal,7(3), 1-9.

Census of India (2001-11): "Uttarakhand, Primary Census Abstract, Uttarkashi Distrit", Office of Registrar General, Government of India, New Delhi.

Arvind Kumar, S. M. (2018). Trends of Occupational Pattern in India: An analysis NSSO. *International Journal of Research in Social Sciences , 8* (1), 463-476.

M. U. Deshmukh, P. A. (2015). STUDY OF OCCUPATIONAL STRUCTURE IN NANDED CITY. *Scholary Research Journal for Humanity Science & Language , 2/10*, 2620-2626.

Surwase, K.S. ,(2116) : "A Geographical Analysis of Occupational Structure in Phaltan Tahsil of Satara District" (MS), AIJRHASS 16-217; Pp. 41 .

Banu, N.Sayira, (201), Changing Occupational structure and Economic Condition of Farm labourers in India: A Study,June 2014, pg.11.

Ghosh, B. N. , (1985), Fundamentals of Population Geography, Delhi pp.21.

Kumar, j., (2013). Analysis of Sex-Ratio in Uttarakhand State from 1901-2011 : a Study. INDIAN JOURNAL OF RESEARCH, 3, 4950.

चान्दना, आर.सी., (2007), जनसंख्या भूगोल, नईदिल्ली कल्याणी पब्लिकेशर्स।

कुमार, प्रशान्त एवं उषा सिंह. (2016). मुंगेर जिला में विकासखंड़वार ग्रामीण व्यवसाय संरचना के बदलते स्वरूप का अध्ययन. राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, 1, 33–50।

सिंह,विक्रम प्रताप एवं सिंह, अरविन्द कुमार. (2017). मिर्जापुर जनपद में व्यावसायिक संरचना का स्थानिक प्रतिरूप. राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका, 1, 51–62।

नेगी, गजराज एवं विजय बहुगुणा. (2019). साक्षरता का स्थानिक वितरण प्रतिरूप– उत्तराखण्ड़ राज्य के गैरसैंण विकासखण्ड (जनपद चमोली) के सन्दर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन. श्रृखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, 6(9), 54–59।